International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.328
Vol.9 No.1 Sept–Oct 2021

एकल परिवार में शिक्षित कामकाजी महिलाओं की भुमिका

डॉ. बन्दना श्रिवास्तव

असिस्टेंट प्रोफेसर, रामेश्वर सिंह ट्रीचर्स कॉलेज

(पांडेय परसावां गया बिहार) (मगध विश्वविद्यालय बोधा गया)

कामकाजीं महिला शब्द का प्रयोग प्रायः नौकरी करने वाली महिलाओं के सन्दर्भ में किया जाता है अर्थात वे महिलायें जो बाहर नियमित रूप से आर्थिक और व्यावसाथिक गति विधियों में व्यस्त रहती है। कामकाजी महिला शब्द उन स्त्रियों के लिये प्रयूक्त हुआ है जो वेतन वाले कार्य में लगी है।

काम करने का अर्थ स्वयं काम करना ही नही दूसरे व्यक्तियों से काम लेना भी है तथा उनके कार्य की निगरानी करना एवं निर्देशन देना आदी भी सम्मिनिता है। आज जब भारतीय नारी के लिये कामकाजी शब्द का प्रयोग किया जाता है तो मात्र वह स्कूलों कॉलेजों अथवा कार्यालयों में सहज सरल ढंग से कार्य करने वाली महिलाओं तक ही सिमित नहीं रह गया। उधोग-धन्धों, कारखानों में व व्यवसायों में भी कार्यक्षेत्र विस्तृत हो गया है। वर्तमान में महिलायें ऐसे कार्यों में प्रवेश कर रही हैं जिनपर सदियों से पूरूषों का एकाधिकार था। आज महिलायें न्यायालया में, अस्पताला में, स्कूल-कालेजों में, उद्योगों में, प्रशासन में, राजनितिक क्षेत्रों में,व्यावसायिक क्षेत्रों में, कना के क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

वर्तमान समय में महिलायें घर के साथ-साथ बाहर के क्षेत्रों में भी कदम रख रही है। वह मात्र स्कूलों, कॉलेजों अथवा कार्यालयों में कार्य करने तक ही सिमित नहीं रही उद्योग-धन्धों, कारखानों, न्यायालयों, प्रशासन, राजनिति, तथा अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों में भी कार्य कर रही है।

वास्तव में परम्परागत भारतीय समाज में महिलाओं के द्वारा घर की चार दीवारी से बाहर निकल कर कोई भी आर्थिक कार्य करना सामाजि प्रतिस्ठा के विरूद्ध माना जाता था। वर्तमान में

महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्म निर्भर बनने के लिये प्रेरित किया जा रहा है। जिससे उनकी सामाजिक स्थिती परिपर्तित हो रही है। इस प्रस्थिति के साथ उनकी भुमिका निर्वहन में संघर्ष की स्थिती बनी रही है।

मुख्य शब्द :- आत्म निर्भरता, स्वावनम्सी,प्रतिमान, परम्परागत।

परिवर्तन समाज का अनिवार्य नियम है।

अतः इस प्रकार जहाँ तक कामकाजी महिलाओं का प्रश्न है वहाँ महिलाओं को कार्य के दौरान उनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जो के निम्नलिखित हैः-

1. आँफिस में सेक्सुअल हरासमेंट का डर।
2. अपने सहकर्मी से पर्याप्त सम्मान नही मिल पाना।
3. महत्वपूर्ण भुमिका न दिये जाना।
4. प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष तौर पर मजाक बनाना।
5. महिलायें अधिकातमः असंगढित क्षेत्र में ही हैं अतः जीवन, व्यवसाय इत्यादी की असुरक्षा तथा निम्न वेतन।
6. जैविक कार्यो (मातृत्व इत्यादी) के लिये पर्याप्त मिल पाना।

परंतु जहाँ कामकाजी महिलाओं के सामने कुछ समस्या हैं वहीं दूसरी ओर उनका समाधान भी विधमान है जो निम्नलिखीत हैः-

घरेलू कार्यो में पूरूषों को महिलाओं के साथ बराबरी से काम में हात बँटाना चाहिये।

घर से बाहर जैसे- आँफिस परिवहन के सांधन इत्यादी की व्यवस्था इतनी सुरक्षित एवं वुमन फ्रैडली हो कि वे वहाँ सुरक्षित महसुस कर सकें।

ठनकी जैविक आवश्यकता को देखते हुये छुट्टियों की पर्याप्त व्यवस्था हो।

संगठित क्षेत्रों में तो मातृत्व लाय अब अनिवार्य हो गया है परंतु असंगठित क्षेत्र में भी ऐसी कुछ व्यवस्था हो या फिर सरकार की ओर से कुछ वितीय सुरक्षा दी जाय।

डोमेस्टिक हेलप को विनयमित तथा सुरक्षित बनाया जाय ताकी महिलाओं की सहायता हो सके तभी हम सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की अधीकाधीक भागीदारी बढ़ा सकेगे और अरूधंति राय, चंदा कोचर, किरण मजुमदार की तरह अनेक महिला उधमी लोक सेवक बन सकेगी।

अध्ययन का उदेश्य:

इस प्रकार कामकाजी महिलायें जब कार्य के लिये घर से बाहर जाती हैं तो उनकी प्रथम वरियता अपने बाहर के कार्य को ठीक प्रकार से करने होती है। यहाँ पर इस शीर्षक के अध्याय के उदेश्य की जानना नितान्त आवश्यक है जो कि निम्न लिखीत हैः-

1. कामकाजी महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति का पता लगाना।
2. कामकाजी महिलाओं की भुमिका संघर्ष के प्रतिमानों का विश्लेषण करना।
3. आर्थिक स्वतन्तता एवं आत्म-निर्भरता की दुष्टि से व्यवसाथ जनित भुमिका एवं परम्परागत भुमिका के प्रति कार्यरत महिलाओं का दृष्टिकोण एवं समायोजन की अवश्स्याओं का विश्लेषण करना।
4. कामकाजी महिलाओं की उनकी परम्परागत भुमिका के प्रति दृष्टिकोण ज्ञात करना।

इस प्रकार कामकाजी महिलाओं का योगदान या भुमिका निम्न लिखीत आँकडों की मदद से स्पष्ट होती हैः-

घर स्वर्य में मदद

क्र. स.	**घर स्वर्य में मदद**	**आवृति**	**प्रतिशत**
1	माता-पिता	20	46.51
2	सास-ससुर	5	11.63
3	भाई-बहन	18	41.86
4	रिश्तेदार	-	-
	योग	43	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है की ऐसी महिलाओं की संख्या सर्वाधिक (46.51%) है जिन्हें माता-पिता का सहयोग है। 11.63 प्रतिशत महिलाओ के पास सास-ससूर मदद करते है तथा 41.86 प्रतीशत महिलाओं के भाई-बहन मदद करते हैं इस सन्दर्भ में रिश्तेदारों का योगदान नगण्य पाया गया।

शिक्षा तथा प्रगति में योगदान

क्र. स.	योगदान परिवारिक सदस्यों का	आवृति	प्रतिशत
1	दादा-दादी	4	9.30
2	नाना-नानी	6	13.95
3	माता	7	16.28
4	पिता	15	34.88
5	भाई	8	18.61
6	बहिन	3	6.98
	योग	43	100

अतः इस प्रकार उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है की आज वर्तमान समय की महिलायें हर क्षेत्र में सशक्त हो रही है। आज वह अपने पैरों पर खड़ी हैं एवं समाज की बागडोर अपने हाथ में लिये हैं।

निष्कर्ष:

इस प्रकार उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है की महिलाएँ आज के वर्तमान दौर मे घर एवं समाज की भुमिका को इमानदारी एवं पूर्णता से निभा रहीं है। जबकी घर में रिश्तेदार एवं बाहर के नौकरीपेशा जीवन में लोगों का साथ एवं सहयोग कमतर में मिल पाता है फिर भी वह अपने जीवन में भिन के पत्थर की तरह अड़िग हैं। साथ ही साथ अपने जिम्मेवारी को इमानदारी पूर्वक निर्वहन भी कर रही है।

सन्दर्भ-सुची:

1. रेखा कस्तवार - स्त्री चितंन की चुनौतियाँ, राजकमन प्रकाशन, 2009
2. रवीन्द्र कुमार पाठक - नारीवादी अर्यषास्त के प्रयोक्ता अमर्त्य सेन,वर्तमान साहित्य मार्च-2008
3. कुसुम मीतल - काउन और समाज, वर्तमान साहित्य जुन, 2008
4. विनोद शाही - वर्तमान साहित्य, जुलाई, 2007